प्रधान संपादक की कलम से : एक वैचारिक संकल्प

भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रति गर्व का भाव तो हमारे भीतर है, किंतु उस ज्ञान को जीवन-व्यवहार में ढालने की वह कड़ी कहीं खो गई है जो हमें अपनी जड़ों से जोड़ती थी। शास्त्रों का गंभीर ज्ञान अक्सर तकनीकी शब्दावलियों और अकादमिक शोध-पत्रों के कड़े आवरण में लिपटा रहा, जिससे वह सामान्य जन की पहुँच से दूर होता गया। 'अस्मिता' इसी आवरण को हटाकर शास्त्र को 'लोक' से जोड़ने का एक विनम्र अनुष्ठान है।

बतौर प्रधान संपादक, मेरा यह दृढ़ मत है कि भारत की वैचारिक अस्मिता का पुनरुत्थान तब तक संभव नहीं है, जब तक इसमें राष्ट्र की प्रखर विदुषियों की सहभागिता न हो। इतिहास साक्षी है कि हमारे घर-परिवारों में ज्ञान का वास्तविक संरक्षण ममता और संस्कारों की भाषा में विदुषी महिलाओं द्वारा ही किया गया है। 'अस्मिता' के माध्यम से हमने देश भर की उन विदुषियों को एक मञ्च पर आमंत्रित किया है, जो न केवल शास्त्रों की मर्मज्ञ हैं, बल्कि उसे 'जन-जन' तक सहज और आत्मीय भाषा में पहुँचाने की कला में भी सिद्धहस्त हैं।

हमारा उद्देश्य संस्कृत के कठिन सूत्रों को 'सरल संवाद' में बदलना है, ताकि जब भारतीय ज्ञान परंपरा की चर्चा हो, तो वह केवल सेमिनार हॉल की गूँज न रहे, बल्कि वह हमारी रसोई, हमारे कार्यस्थल और हमारी भावी पीढ़ी की सोच का हिस्सा बने। 'विदुषी समूह' की यह विशेष पहल इसी विश्वास का परिणाम है कि ज्ञान जब ममता और सरलता के साथ परोसा जाता है, तो वह केवल सूचना नहीं रहता, अपितु 'अमृत' बन जाता है।

'अस्मिता' का यह प्रवेशांक केवल एक पत्रिका का प्रकाशन नहीं, बल्कि भारतीय मेधा के स्वाभिमान की एक नई यात्रा है। आइए, हम सब मिलकर भारतीय ज्ञान को 'विषय' से 'जीवन' बनाने की इस यात्रा के सहयात्री बनें।

डॉ. राजेश कुमार मिश्र
प्रधान संपादक, अस्मिता
अन्ताराष्ट्रिय महासचिव, ग्लोबल संस्कृत फोरम
असिस्टेंट प्रोफेसर, नव नालन्दा महाविहार,
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार